ब्रेल पुस्तकों 'जीना आये तो जिंदगी तथा 'कर्म जिज्ञासा' के लोकार्पण के लिए बालयोगी सभागार में 9 नवम्बर को जैन समाज द्वारा आयोजित समारोह में माननीय लोक सभा अध्यक्ष का भाषण

1. साध्वी युगल- निधि और कृपा श्री जी के स्वर्ण जयन्ती समारोह एवं उनके द्वारा ब्रेल लिपि में दृष्टिबाधितों के लिए भगवान महावीर के संदेश के प्रचार के उद्देश्य से प्रथम बार लिखित पुस्तकों- 'जीना आये तो जिंदगी' और 'कर्म जिज्ञासा' के लोकार्पण के अवसर पर इस गरिमामय कार्यक्रम में आप सबके बीच आकर मुझे बहुत ख़ुशी हो रही है। मैं इस समारोह के लिए श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन संघ को बधाई देती हूँ।
2. मैं साध्वी युगल निधि और कृपा श्रीजी के स्वर्ण जयन्ती वर्ष पर उन्हें हार्दिक बधाई देती हूँ तथा उनके द्वारा रचित पुस्तक के लोकार्पण के अवसर पर उनका अभिनंदन करती हूं। वे दीर्घायु हों तथा आने वाले समय में अपनी लेखनी से समाजोपयोगी एवं कालजयी रचनाएं करते रहें, यही मेरी कामना है। इन प्रबुद्ध विद्वानों और सुविख्यात संतों ने अपना समस्त जीवन मानवता की सेवा, जैन दर्शन को समझने और इसके बारे में लिखने में अर्पण किया है। लेखन की सीमा से आगे बढ़कर ब्रेल लिपि में पुस्तक छपवाने की यह पहल अनुकरणीय है। “जीना आए तो ज़िन्दगी” नामक पुस्तक में लेखिकाद्वय ने जीवन में अनुभव किए जाने वाले अवसाद, असंतोष, कड़वाहट, निराशा और शिकायतों इत्यादि विषयों पर गंभीर चिंतन-मनन के पश्चात् अपना मंतव्य सुगम भाषा में पाठकों के समक्ष रखा है। उन्होंने जीवन-व्यवहार में आने वाली कठिनाइयों का हल बड़ी सरलता से लिख दिया है। इन समाधानों को आत्मसात किए जाने की आवश्यकता है। “कर्म जिज्ञासा” में उन्होंने कर्म के विषय में अत्यंत रोचक तथ्य प्रकट किया है तथा कर्म की गति की व्याख्या की है। ये दोनों ही पुस्तकें शिक्षाप्रद एवं प्रेरक हैं। आशा है कि इन पुस्तकों में प्रस्तुत सन्देश के प्रचार-प्रसार से हमारे समाज के उस संवेदनशील वर्ग के जीवन पर प्रभाव पड़ेगा जिसकी कई बार उपेक्षा कर दी जाती है। चूँकि यह पुस्तक देशभर के अंध विद्यालयों में तथा विभिन्न जेल लाइब्रेरी में मुफ्त बांटी जायेगी, इसलिए यह सन्देश दूर-दूर तक पहुंचेगा और कई लोगों को उनकी शिक्षाओं को अपने दैनिक जीवन में उतारने में मदद मिलेगी।
3. णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,

   णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं,

एसो पंच णमोकारो, सव्व पावप्पणासणी

मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमम हवई मंगलं ।

पंचशील सिद्धांत के प्रवर्तक एवं जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर द्वारा दिया गया यह नवकार मंत्र जनहितकारी एवं सर्वोच्च मंत्र है जिसका अर्थ है कि हमें उत्तम व्यक्ति, सिद्ध पुरुष, आचार्य, उपाध्याय और साधु एवं साध्वीजनों का निरंतर नमन करना चाहिए। ऐसा करने से हमारे सारे पाप नष्ट हो जाते हैं तथा सभी का मंगल एवं शुभ होता है।

4. मित्रो, मैं एक बार फिर साध्वी युगल की सराहना करना चाहूंगी कि उन्होंने पुस्तकें ब्रेल में छपवाने की पहल की। हमें समाज में सबके लिए सोचने की जरूरत हैं। हमें समाज के ऐसे वर्गों तक पहुंचना चाहिए जो विभिन्न प्रकार की मानसिक, शारीरिक चुनौतियों का सामना कर रहे हैं । हम अक्सर ऐसे लोगों के बारे में पढ़ते हैं जिन्होंने मुश्किल हालात का सामना करते हुए सबके सामने एक मिसाल रखी। इन लोगों ने सिद्ध कर दिया है कि यदि कोई अपने मन को जीत ले और इसके लिए सभी संभव प्रयास करे तो कुछ भी असंभव नहीं है। स्वयं को दया का पात्र बनाने की बजाय वे भरपूर जीवन जीते हैं। पिछले महीने ही मैंने एक दृष्टिबाधित आईएएस अधिकारी के बारे में एक खबर पढ़ी। यह अधिकारी दृष्टिहीन लोगों को उनके करियर में मदद देने के लिए भी कार्य कर रहा है। मुझे विश्वास है कि ऐसे प्रयासों से उन असंख्य लोगों के जीवन को बदलने और उन्हें आशावान बनाने में मदद मिलेगी जो अपने जीवन में चुनौतियों का संघर्ष के साथ सामना कर रहे हैं।

5. अपनी बात समाप्त करने से पहले मैं एक बार फिर श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन संघ को इस समारोह के आयोजन के लिए धन्यवाद देती हूं। मैं कामना करती हूं और मुझे पूरा विश्वास है कि आपको अपने भावी महान प्रयासों में सफलता मिलेगी।